बीए अर्थशास्त्र

Semester 01 (Paper 01)

स्थैतिक तथा प्रवैगिक विश्लेषण

(Static and Dynamic Analysis)

- **स्थैतिक अर्थशास्त्र**
- **प्रवैगिक विश्लेषण**

स्थैतिक अर्थशास्त्र (Static Economics)

भौतिक विज्ञान में **स्थैतिक** शब्द से *विश्राम की उस स्थिति का बोध होता है जिसमे कोई गति नहीं होती,* किंतु अर्थशास्त्र में स्थैतिक शब्द गति रहित, मृत्यवत अर्थव्यवस्था की ओर संकेत नहीं करता बल्कि एक ऐसी अर्थव्यवस्था को बतलाता है *जिसमें गति तो हो किंतु यह गति सदा एक समान नियमित एवं शांतिपूर्ण रहती है।*

इस प्रकार अर्थशास्त्र में स्थैतिक एक ऐसी दशा है जिसमें प्रतिदिन तथा प्रतिवर्ष कार्य समान गति से सरलतापूर्वक चलता रहता है।

प्रो. पीगू का यह कथन इस संदर्भ में विशेष महत्वपूर्ण है।

"जिन बूंदों से मिलकर झरना बनता है, वे सदा बदलती रहती है किंतु झरना अपरिवर्तित ही रहता है"।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

अर्थशास्त्र के सभी विषयों एवं कक्षाओं के नोट्स, प्रश्नोत्तर, सैंपल पेपर, वस्तुनिष्ठ प्रश्न, विगत वर्षों के प्रश्नपत्र, अभ्यास प्रश्नपत्र (हिंदी या अंग्रेजी माध्यम) के PDF आपको www.theeconomicsguru.com पर मिल जायेंगे।

इसके साथ ही सभी हिंदी माध्यम तथा अंग्रेजी माध्यम के छात्रों के लिए Free **LIVE CLASS** भी उपलब्ध है, हमारे **YOUTUBE CHANNEL "THE ECONOMICS GURU"** पर । अभी **subscribe** कर लीजिये और ज्यदा से ज्यादा **शेयर** कर दीजिये अपने दोस्तों के बीच।

किसी भी प्रकार की समस्या के लिए आप हमसे सम्पर्क कर सकते है, YOUTUBE के कमेंट बॉक्स में कमेन्ट करें या वेबसाइट के Email वाले Option में जाकर **Email** करे या WhatsApp कर सकते है (Website में लिंक दिया गया है।

धन्यवाद

नकुल ढाली

The Economics Guru

लाभार्थी बोर्ड:

CBSE, UK Board, UP Board, Bihar Board, MP Board, CG Board, Rajasthan Board, Haryana Board

साथ ही **BA; B.COM; MA** के सभी SEMESTER लिए भी अध्ययन सामग्री उपलब्ध है।

अभी VISIT करें www.theeconomicsguru.com

Subscribe my **YOUTUBE** channel **THE ECONOMICS GURU**

Follow me:

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

Facebook- *Nakul Dhali*

Instagram- *@theeconomicsguru*

अलग अलग अर्थशास्त्रियों ने स्थैतिक दशा के बारे में अपने विचार इस प्रकार व्यक्त किए है-

प्रो. मार्शल के शब्दों में, "एक स्थैतिक अवस्था में सभी महत्त्व ऐसे स्थान पर दृष्टिगोचर होते हैं, जहाँ (अ) जनसंख्या और धन दोनों में वृद्धि हो रही हो और दोनों में वृद्धि की दर लगभग समान होती है। (ब) भूमि में कोई कोई कमी नहीं होती। (स) उत्पत्ति की विधियों और दशा में बहुत कम परिवर्तन होता है। (द) जहाँ मनुष्य का चरित्र स्वयं स्थिर रहता है"।

प्रो. हिक्स के अनुसार, "आर्थिक सिद्धांत के उन भागों को आर्थिक स्थैतिक कहा जाता है जिसमें हम तिथि का ध्यान नहीं रखते और प्रावैगिक अर्थशास्त्र उन भागों को कहते हैं जिनमें प्रत्येक इकाई या मात्रा का संबंध किसी तिथि से होता है"।

प्रो. जे के मेहता के अनुसार, "स्थैतिक स्थिति वह है जो एक निश्चित समय के पश्चात भी उसी रूप में बनी रहती है, परंतु यदि निश्चित समय के उपरांत अवस्था में परिवर्तन नहीं हो जाता तो उसे प्रवैगिक स्थिति कहते है"।

जैसे

- एक जंगल में वृक्ष उगते है और नष्ट भी होते हैं किंतु जंगल वैसे का वैसा बना रहता है

- एक पानी की टंकी में पानी आता भी है और बाहर भी जाता है, किंतु गति इस प्रकार की है कि आने और जाने से टैंक का पानी उतना ही रहे।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

स्थैतिक अर्थशास्त्र की विशेषताएँ।

1. परिवर्तन नियमित, समान एवं स्थिर गति से होता है।
2. आर्थिक चक्र मूल्यों के बीच संबंध स्थापित किया जाता है वो एक ही समय से संबंधित होता है।

3. स्थैतिक विश्लेषण में संतुलन की एक स्थिती का अध्ययन किया जाता है जिससे परिवर्तन तो होता भी है तो क्षणिक रूप से होता है

4. स्थैतिक विश्लेषण की एक अन्य विशेषता यह है कि इसमें ना बचत की जाती है नहीं विनियोग।

5. इस अवस्था में जनसंख्या, पूंजी उत्पादन की तकनीक, व्यावसायिक संगठन, उपभोक्ता की आवश्यकता आदि स्थिर रहती है।

स्थैतिक अर्थशास्त्र का महत्त्व

- परिवर्तनशील अर्थव्यवस्था के अध्ययन में सहायक।
- गणित की ज्ञान की आवश्यकता नहीं होती।
- जटिल समस्याओं के समाधान में महत्त्व।
- स्थैतिक अर्थशास्त्र के अन्तर्गत प्रत्याशी को समाप्त माना जाता है।

स्थैतिक विश्लेषण के सीमा एवं दोष

- काल्पनिक संसार की बात करता है।
- यह अवास्तविक मान्यताओं पर आधारित है- जैसे पूर्ण गतिशीलता, पूर्ण ज्ञान, प्रतियोगिता, जनसंख्या का निश्चित आकर, अनिश्चितता की उपस्थिति जो की अव्यवहारिक है।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

प्रावैगिक अर्थशास्त्र (Dynamic Economics)

प्रावैगिक अर्थशास्त्र के अन्तर्गत अर्थव्यवस्था में होने वाले निरन्तर परिवर्तनों व इन परिवर्तनों को प्रभावित करने वाले तत्वों परिवर्तन की प्रक्रिया का विश्लेषण किया जाता है।

प्रावैगिक अर्थशास्त्र की परिभाषा के संबंध में अर्थशास्त्रियों के विचार इस प्रकार है-

प्रो. जे. आर. हिक्स के अनुसार, "आर्थिक सिद्धांत के उन भागों को पर प्रावैगिक अर्थशास्त्र कहा जाता है, जिनमें प्रत्येक मात्रा का तिथिकरण करना आवश्यक होता है"।

प्रो. हैरोड के अनुसार, "परिवर्तनशील अर्थशास्त्र से अभिप्राय आर्थिक आंकड़ों में निरंतर होने वाले परिवर्तनों के अध्ययन से है। यह परिवर्तन एक बारगी होने वाले परिवर्तनों से भिन्न होते हैं"।

सैम्युलसन के अनुसार, "हम कह सकते हैं कि एक प्रणाली पर प्रावैगिक है यदि एक समय अवधि में उसका व्यवहार ऐसे कार्यात्मक समीकरणों द्वारा निर्धारित है जिसमें कि समय के विभिन्न बिंदुओं पर चर्चा एक महत्वपूर्ण तरीके से संबंधित होते हैं"।

प्रावैगिक अर्थशास्त्र की विशेषताएँ

- प्रावैगिक अर्थशास्त्र के अन्तर्गत परिवर्तन की प्रक्रिया समय से स्पष्ट मान्यता दी जाती है।
- यह अर्थव्यवस्था के तुरंत समायोजन की मान्यता को स्वीकार नहीं करता है।
- प्रावैगिक अर्थशास्त्र यह बताता है कि किस प्रकार एक स्थिति का पिछले स्थिति में विकास होता है। अर्थात यह समय व विकास दोनों को अध्ययन करता है।
- प्रावैगिक अर्थशास्त्र संतुलन को प्रभावित करने वाले आधारभूत दशाओं में होने वाले परिवर्तनों का भी अध्ययन करता है। जैसे- रुचि तकनीक, जनसंख्या, साधन व संगठन जैसे आर्थिक तत्वों में होने वाले परिवर्तन वे संतुलन में होने वाला परिवर्तन।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

प्रवैगिक अर्थशास्त्र का क्षेत्र

प्रावैगिक अर्थशास्त्र के अंतर्गत मुख्य रूप से उन समस्याओं का अध्ययन किया जाता है जो संतुलन से संबंधित हों, जिनमें समय तत्व जुड़ा होता है। जैसे-

- जनसंख्या वृद्धि का नियम।
- व्यापार चक्र का ध्यान।
- स्टॉक मार्शल की आभास लगन की धरना।
- इस लाभ विनियोग के सिद्धांत।
- आर्थिक विकास एवं नियोजन के सिद्धांत।
- ब्याज का सिद्धांत।

प्रावैगिक अर्थशास्त्र का महत्त्व

- वास्तविकता के अधिक निकट होता है।
- वास्तविक समस्याओं जैसे संतुलन, जनसंख्या, व्यापार चक्र, प्रयोग आदि से संबंधित समस्याओं का अध्ययन करता है।
- यह अधिक लोचदार है।
- आर्थिक विकास के अध्ययन में सहायक है।
- आर्थिक विश्लेषण की नई तकनीकों को विकसित करने में सहायता करता है।
- व्यापार चक्रों के अध्ययन में सहायक महत्त्व है।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION INSPIRATION KNOWLEDGE

प्रावैगिक अर्थशास्त्र की सीमाएं

- प्रावैगिक विश्लेषण के लिए उच्च गणित तथा ज्ञान की आवश्यकता है। जिससे यहाँ रीति बहुत कठिन मानी जाती है।
- वास्तविक जगत में परिवर्तन बहुत तेज़ी से होते हैं। जिससे शुद्ध दृष्टिकोण से अध्ययन कर पाना कठिन है।
- प्रावैगिक अर्थशास्त्र की भावना का पूर्ण विकास अभी तक नहीं हो पाया है।

स्थैतिक तथा प्रावैगिक अर्थशास्त्र में अन्तर
(Difference between Static and Dynamic Economics)

क्र. सं.	अन्तर का आधार	स्थैतिक अर्थशास्त्र (Static Economics)	प्रावैगिक अर्थशास्त्र (Dynamic Economics)
1.	समय	स्थैतिक विश्लेषण में अधिक चर मूल्यों के बीच जो सम्बन्धित स्थापित किया जाता है, वह एक ही समय से सम्बन्धित होता है।	प्रावैगिक आर्थिक विश्लेषण में आर्थिक चर मूल्यों के बीच जो सम्बन्ध स्थापित किया जाता है, वह विभिन्न समयावधियों से सम्बन्धित होता है।
2.	गति	स्थैतिक विश्लेषण में परिवर्तन नियमित, समान एवं स्थिर गति से होते हैं।	प्रावैगिक विश्लेषण में परिवर्तन नियमित, समान एवं स्थिर गति से नहीं होते।
3.	मान्यताएँ	स्थैतिक विश्लेषण में अन्य सभी तत्व स्थिर मानकर एक निश्चित बिन्दु का अध्ययन किया जाता है।	प्रावैगिक विश्लेषण में सभी तत्वों के परिवर्तन का एक साथ अध्ययन किया जाता है।
4.	सन्तुलन	स्थैतिक विश्लेषण के अन्तर्गत साम्य की केवल एक ही अवधारणा का अध्ययन किया जाता है।	प्रावैगिक आर्थिक विश्लेषण के अन्तर्गत एक साम्य से दूसरे साम्य में पहुँचने वाले सम्पूर्ण रास्ते का अध्ययन किया जाता है।
5.	तिथि निर्धारण	एक स्थैतिक सिद्धान्त में सभी चर एक ही अवधि से सम्बन्धित होते हैं इसलिए उनकी तिथि का निर्धारण आवश्यक नहीं है।	प्रावैगिक आर्थिक विश्लेषण में तिथिकरण का बड़ा महत्वपूर्ण स्थान है।
6.	गणित का प्रयोग	स्थैतिक आर्थिक विश्लेषण सरल विश्लेषण है क्योंकि इस अध्ययन में गणित की सहायता नहीं ली जाती है।	प्रावैगिक आर्थिक विश्लेषण एक जटिल आर्थिक विश्लेषण है क्योंकि इसमें गणित का प्रयोग किया जाता है।
7.	क्षेत्र	स्थैतिक विश्लेषण का प्रमुख क्षेत्र सीमान्त विश्लेषण है।	इस विश्लेषण का प्रमुख क्षेत्र विकास मॉडल है।
8.	सीमाएँ	यह विश्लेषण उन मान्यताओं पर आधारित है जो अवास्तविक हैं, जैसे—पूर्ण प्रतियोगिता व पूर्ण ज्ञान आदि।	यह विश्लेषण वास्तविक मान्यताओं पर आधारित है।
9.	बामोल का विचार	बामोल के अनुसार स्थैतिक विश्लेषण का सम्बन्ध केवल वर्तमान से है।	प्रावैगिक विश्लेषण का सम्बन्ध भूत एवं भविष्य काल से ही है।

LIKE AND **SHARE** THE CLASS LINK

SUBSCRIBE THE CHANNEL

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE
THE ECONOMICS GURU

WhatsApp/ 7830010683

EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

FOLLOW ME ON *INSTAGRAM* / @dhali_sir

FOLLOW ME ON *FACEBOOK* / Commerce Valley

अर्थशास्त्र के सभी विषयों एवं कक्षाओं के नोट्स, प्रश्नोत्तर, सैंपल पेपर, वस्तुनिष्ठ प्रश्न, विगत वर्षों के प्रश्नपत्र, अभ्यास प्रश्नपत्र (हिंदी या अंग्रेजी माध्यम) के PDF आपको www.theeconomicsguru.com पर मिल जायेंगे।

इसके साथ ही सभी हिंदी माध्यम तथा अंग्रेजी माध्यम के छात्रों के लिए Free **LIVE CLASS** भी उपलब्ध है, हमारे **YOUTUBE CHANNEL "THE ECONOMICS GURU"** पर । अभी **subscribe** कर लीजिये और ज्यदा से ज्यादा **शेयर** कर दीजिये अपने दोस्तों के बीच।

किसी भी प्रकार की समस्या के लिए आप हमसे सम्पर्क कर सकते है, YOUTUBE के कमेंट बॉक्स में कमेन्ट करें या वेबसाइट के Email वाले Option में जाकर **Email** करे या WhatsApp कर सकते है (Website में लिंक दिया गया है।

धन्यवाद

नकुल ढाली

The Economics Guru

लाभार्थी बोर्ड:

CBSE, UK Board, UP Board, Bihar Board, MP Board, CG Board, Rajasthan Board, Haryana Board

साथ ही **BA; B.COM; MA** के सभी SEMESTER लिए भी अध्ययन सामग्री उपलब्ध है।

अभी VISIT करें www.theeconomicsguru.com

Subscribe my **YOUTUBE** channel **THE ECONOMICS GURU**

Follow me:

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

Facebook- *Nakul Dhali*

Instagram- *@theeconomicsguru*